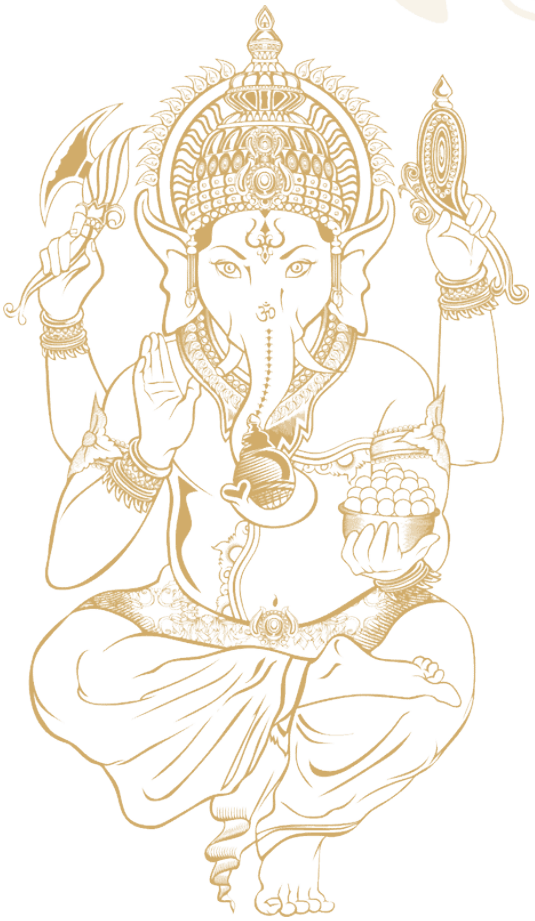

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121227801 Date: 09/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
27/10/1997	जन्म तिथि	06/03/2001
सोमवार	दिन	मंगलवार
घंटे 12:32:00	जन्म समय	14:15:00 घंटे
घटी 14:50:40	जन्म समय(घटी)	18:44:19 घटी
India	देश	India
Hamirpur	स्थान	Hamirpur
31:38:00 उत्तर	अक्षांश	31:38:00 उत्तर
76:36:00 पूर्व	रेखांश	76:36:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:36	स्थानिक संस्कार	-00:23:36 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:35:44	सूर्योदय	06:45:16
17:39:00	सूर्यास्त	18:24:58
23:49:31	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:09

धनु	लग्न	कर्क
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
सिंह	राशि	कर्क
सूर्य	राशि-स्वामी	चन्द्र
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	पुष्य
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शनि
4	चरण	1
ऐन्द्र	योग	शोभन
कौलव	करण	बव
टू-टूंगर	जन्म नामाक्षर	हू-हुस्नी
वृश्चिक	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
वनचर	वश्य	जलचर
मूषक	योनि	मेष
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	मध्य
श्वान	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 2वर्ष 8मा 19दि		28:02:03	धनु	लग्न	कर्क	00:08:46	शनि 16वर्ष 6मा 13दि	
राहु		10:04:15	तुला	सूर्य	कुंभ	21:58:26	बुध	
17/07/2023		24:51:11	सिंह	चंद्र	कर्क	05:03:39	19/09/2017	
17/07/2041		26:32:33	वृश्चि	मंगल	वृश्चि	15:54:40	19/09/2034	
राहु	30/03/2026	18:41:38	तुला	बुध	मक	25:06:09	बुध	15/02/2020
गुरु	22/08/2028	18:51:56	मक	गुरु	वृष	09:53:37	केतु	12/02/2021
शनि	29/06/2031	26:48:08	वृश्चि	शुक्र	मीन	23:42:55	शुक्र	13/12/2023
बुध	16/01/2034	21:46:01	मीन व	शनि	वृष	01:40:14	सूर्य	19/10/2024
केतु	03/02/2035	25:13:24	सिंह	राहु व	मिथु	19:42:03	चन्द्र	20/03/2026
शुक्र	03/02/2038	25:13:24	कुंभ	केतु व	धनु	19:42:03	मंगल	17/03/2027
सूर्य	29/12/2038	10:58:54	मक	हर्ष	मक	28:21:34	राहु	04/10/2029
चन्द्र	28/06/2040	03:26:51	मक	नेप	मक	13:47:37	गुरु	10/01/2032
मंगल	17/07/2041	10:27:13	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	21:22:17	शनि	19/09/2034

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:31 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:09

लग्न-चलित

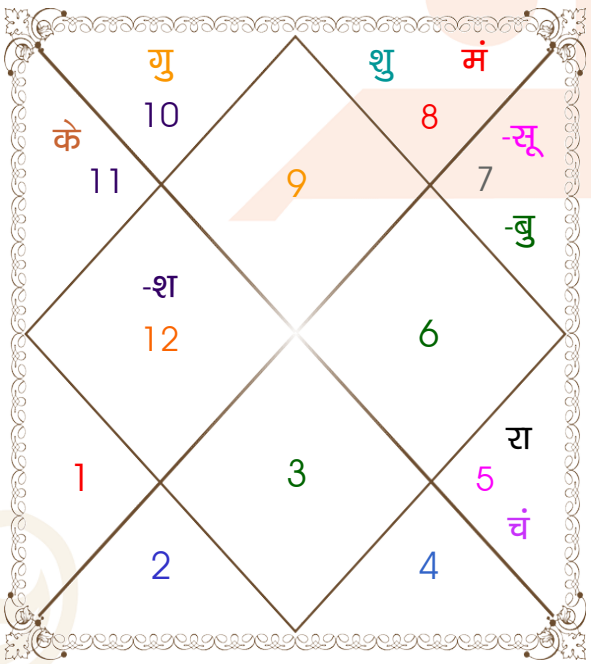

लग्न-चलित

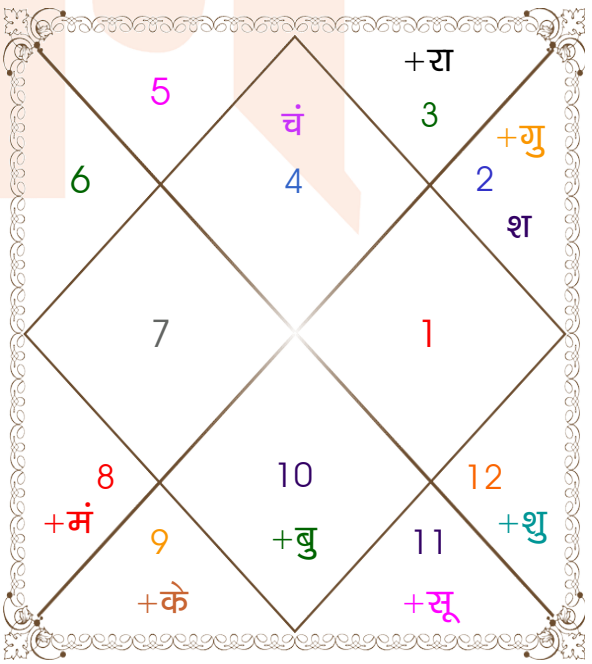

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	मेष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	चन्द्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	14.50		

कुल : **14.5 / 36**

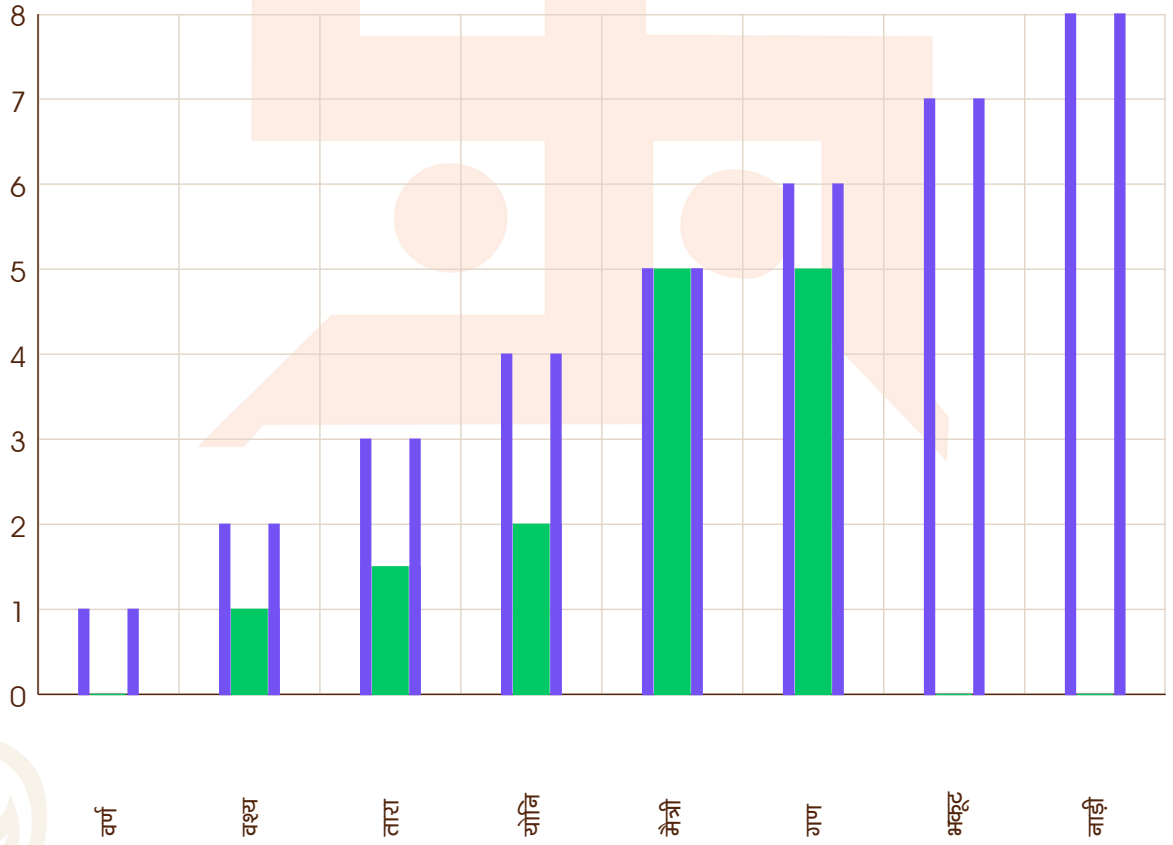

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ll का नक्षत्र पुष्य है।

l का वर्ग श्वान है तथा ll का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर lम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार l और ll का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

l मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल l कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ए;डडम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल l कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ll मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु ll कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में। एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष ।माप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ॥ कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

। तथा ॥ में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

। का वर्ण क्षत्रिय तथा ॥ का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच ।दैव अहं का ट्कराव होता रहेगा। ॥थ ही ॥ हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि। ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति। हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर ।मझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना। एवं बच्चों के विका। में बाधक ॥बित हो ।कती है।

वश्य

। का वश्य वनचर है एवं ॥ का वश्य जलचर है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। दोनों एक-दूसरे के प्रति उदासीन रहेंगे तथा अपनी इच्छानुसार दोनों अपना जीवन निर्वाह करते रहेंगे। वनचर। एवं जलचर ॥ के बीच वैवाहिक ।बंध करने। उनका वैवाहिक जीवन औसत ही माना जायेगा अर्थात न ही अच्छा और न ही बुरा। यद्यपि कि दोनों एक-दूसरे का ख्याल नहीं रखेंगे फिर भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भली-भांति करते रहेंगे। इनका जीवन ॥मान्यतः नीर। ही रहेगा क्योंकि प्रेम एवं रोमां। के तत्व इनके जीवन। अनुपस्थित ही रहने वाले हैं।

तारा

। की तारा क्षेम तथा ॥ की तारा वध है। ॥ की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह। एवं ॥ दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल ।कता है। ॥ अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली ॥बित हो ।कती है। अतः ।भव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो ।कता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत ।कते हैं तथा ।फलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ ।कती है।

योनि

। की योनि मूषक है तथा ॥ की योनि मेष है। अर्थात दोनों की योनि ।मान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात ।म ।बंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी ।मझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में ।हयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह ।कता है। ॥थ ही दोनों के बीच अविश्वा। की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को ।देह की भावना। देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी ।मझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो ।कते हैं। ।भव है कि दोनों के बीच अवैध ।बंध को लेकर ।देह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो ।कता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो ।कता है। वर या कन्या में। कोई भी विश्वासघात भी कर ।कता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो ।कता है।

इनको अपने जीवन में अत्याधिक ।घर्ष के उपरांत ही ।फलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में ।फलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की ।भावना है। जिसके कारण दोनों को ।मय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के ्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमां। एवं ेक में रुचि की कमी भी रह ।कती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण ।मय-समय पर धन हानि भी हो ।कती है। आप। में प्रेम एवं ौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इ। प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न ।मान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में । एवं ॥ दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार े अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि े यदि । एवं ॥ के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण । एवं ॥ जीवन की हर खुशी एवं ुख प्राप्त करने में ।फल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, ।मझ एवं ।हयोग की भावना बनी रहेगी। ाथ ही हर प्रकार की ुख-सुविधाओं एवं वैभव े परिपूर्ण होंगे।

गण

। का गण मनुष्य तथा ॥ का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में ॥ सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, ौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य ।भी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर। व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इ। भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण । अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं ।माज की हर अपेक्षा को पूरा करने में ।क्षम रहेंगे तथा ।भी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

। से ॥ की राशि द्वादश भाव में स्थित है ॥ से । की राशि द्वितीय भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके फलस्वरूप दोनों के बीच कलह, लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं परिवार में कुछ अनहोनी घटनाएं आदि हो ।कती हैं। इ। मिलान में । परिश्रमी, परिवार े प्रेम करने वाला, अच्छा कमाने वाला तथा बचत करने वाला होगा किंतु ॥ का स्वभाव इसके ठीक विपरीत होगा। ॥ की शारीरिक स्थिति कमजोर तथा स्वास्थ्य अक्सर खराब रह ।कता है। ाथ ही ॥ तुरंत क्रोधित होने वाली तथा अपव्ययी होंगी। वह अपने पति द्वारा कमाए गए पैसों को अपने फालतू शौकों एवं दिखावे में व्यय करने वाली होंगी। परिणामतः दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे।

नाड़ी

। की नाड़ी मध्य है तथा ॥ की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी ।मान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि े। दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की ।मान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में े। किसी की मृत्यु की ।भावना होती है। ऐसी स्थिति में । एवं ॥ का विवाह अति घातक हो ।कता है। आपकी ।तान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप े। असंतुलित, मानसिक बीमारी े। ग्रस्त हो ।कती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

। की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त सिंह तथा ॥ की जलतत्व युक्त कर्क राशि है। नैसर्गिक रूप ी अग्नि एवं जलतत्व में शत्रुता एवं असमानता का भाव रहता है । अतः । और ॥ के मध्य स्वाभाविक असमानताएं विद्यमान होंगी जिससे वैवाहिक जीवन में अनावश्यक ।मस्याएं एवं विवाद उत्पन्न होंगे फलतः यह मिलान अच्छा नहीं रहेगा।

। की जन्म राशि का स्वामी ूर्य तथा ॥ की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर मित्र है। अतः । और ॥ के मध्य स्वाभाविक मित्रता का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की वे उन्मुक्त भाव ी प्रशंसा करेंगे तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे। इससे उनके दाम्पत्य जीवन में परस्पर ।दभाव आकर्षण एवं ।मर्पण का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के अस्तित्व को भी ।म्मान प्रदान करेंगे। इसके प्रभाव ी उनके स्वभावगत मतभेदों में भी न्यूनता आएगी तथा वैवाहिक जीवन ुख पूर्वक व्यतीत होगा।

। और ॥ की राशियां परस्पर द्वादश एवं द्वितीय भाव में पड़ती हैं। अतः इसके प्रभाव ी यदा कदा परस्पर वैमनस्य तथा विरोध का भाव उत्पन्न होगा। । और ॥ परस्पर उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। ऐसी स्थिति में आर्थिक विषमता रहेगी । अतः यदि । और ॥ किंचित धैर्य एवं बुद्धिमता का परिचय दें तो उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता हो ।कती है।

। का वश्य वनचर तथा ॥ का वश्य जलचर है। वनचर एवं जलचर में नैसर्गिक ।मानता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में ।मानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक अंतर भी ।मान रहेगा। ।ाथ ही काम ंबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा ।न्तुष्ट करने में ।मर्थ रहेंगे।

। का वर्ण क्षत्रिय तथा ॥ का वर्ण ब्राह्मण है। इसके प्रभाव ी । की प्रवृति पराक्रमी एवं ।ाहसिक कार्यो के प्रति तत्पर होगी तथा ॥ शैक्षणिक धार्मिक एवं शास्त्रीय कार्यो में अधिक रूचिशील रहेंगी, अतः कार्य क्षेत्र की दृष्टि ी ये उन्नति मार्ग पर अग्रसर रहेंगे ।

धन

। और ॥ की तारा परस्पर ।म है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा परन्तु इनकी जन्मराशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती हैं जो कि भकूट दोष माना जाता है। ।ाथ ही मंगल का भी ॥ पर अशुभ प्रभाव रहेगा जिससे इनको धनार्जन अवश्य होगा परन्तु यदा कदा आर्थिक दृष्टि ी उतार चढ़ाव का ।ामना करना पड़ेगा।

भकूट दोष एवं मंगल के अशुभ प्रभाव ी । की प्रवृति अनावश्यक रूप ी धन व्यय करने की होगी जिससे इनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी तथा ।मय ।मय पर धनाभाव का भी ।ामना करना पड़ेगा। अतः । और ॥ को चाहिए कि ऐसी प्रवृतियों पर यत्नपूर्वक नियंत्रण रखें।

स्वास्थ्य

। और ॥ दोनों की नाड़ी मध्य है। अतः इसके प्रभाव े इनको ।मय ।मय पर स्वास्थ्य ंबंधी परेशानियों का ।मना करना पड़ेगा। इससे । और ॥ दोनों को उदर ंबंधी कष्ट होगा तथा लीवर े ंबंधित परेशानियां भी ।मय ।मय पर होती रहेंगी। वे अपच आदि े भी असुविधा की अनुभूति करेंगे। ॥थ ही मंगल का दुष्प्रभाव ॥ के स्वास्थ्य पर रहेगा इसके प्रभाव े इनको धातु या गुप्त रोग अथवा मासिक धर्म ंबधी परेशानियां रहेंगी। अतः नाड़ी दोष एवं मंगल के अशुभ प्रभाव के कारण ऐसे मिलान की उपेक्षा करनी चाहिए। तथापि उपरोक्त दुष्प्रभाव को कम करने के लिए हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवा। करना शुभ रहेगा।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि े यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव े। और ॥ को उचित ।मय पर ंतति की प्राप्ति होगा तथा कन्या ंतति की अपेक्षा पुत्र ंतति अधिक रहेगी।

प्रसव ंबंधी कष्ट के लिए आप को किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। इनका प्रसव ॥मान्य रूप े ।म्पन्न होगा तथा इससे ंबधित कोई भी ।मस्या नहीं होगी। ॥ सुदंर एवं स्वस्थ बच्चों को जन्म देंगी तथा स्वयं भी पूर्ण रूपेण स्वस्थता की अनुभूति करेंगी। इससे । और उसके परिवार के भी ।दस्य प्रसन्न तथा ।न्तुष्ट रहेंगे।

। और ॥ की ंततियां व्यवहारकुशल एवं माता पिता के लिए आज्ञाकारी रहेंगी तथा अपने बच्चों की प्रगति े दोनों ।न्तुष्टि एवं आनंद की अनुभूति करेंगे। ॥थ ही कार्य क्षेत्र में भी वे स्वपरिश्रम योग्यता एवं बुद्धिमत्ता े उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। उनके उत्कृष्ट कार्य कलापों े। और ॥ अपने आप को भाग्यशाली ।मझेंगे। इनकी ंततियां कभी भी उनकी इच्छा के विपरीत कोई भी कार्य नहीं करेंगी जिससे माता पिता को उन पर गर्व रहेगा। इ। प्रकार ुदंर, आज्ञाकारी एवं बुद्धिमान ंतति े युक्त होकर । और ॥ का पारिवारिक जीवन ुख शांति एवं आनंद े व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

॥ के अपनी ॥। से ॥मान्यतया अच्छे ंबध रहेंगे परन्तु यदा कदा उनके मध्य अनावश्यक मतभेद तथा तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु परस्पर ॥मंजस्य के द्वारा उनका ॥माधान हो जाएगा तथा इससे विशेष कठिनाई नहीं होगी। ॥थ ही ॥ सा। से अपनी माता के ॥मान व्यवहार करेंगी तथा इसी प्रकार उनकी ेवा तथा ुख ुविधा का ध्यान रखेंगी।

लेकिन ।सुर को प्रसन्न एवं ।न्तुष्ट करने में ॥ को काफी परेशानी तथा असुविधा का ॥मना करना पड़ेगा। यदि ॥ धैर्य, गंभीरता तथा ॥मंजस्य का उनके प्रति प्रदर्शन करेंगी तो उनसे किंचित मात्रा में ।हानुभूति प्राप्त हो ।कती है। देवर एवं ननदों े ॥ के ंबधों में मधुरता का अभाव रहेगा तथा परस्पर ईर्ष्या तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा। इ।

प्रकार ।मंजस्य एवं बुद्धिमता े ही ॥ ससुराल में अनुकूल वातावरण प्राप्त कर ।कती है।

ससुराल-श्री

। के अपनी ॥ से मधुर ंबंध रहेंगे तथा आपसी ॥मंजस्य े इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। ॥ को । अपनी माता के ।मान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी ेवा तथा ुख ुविधा का भी ध्यान रखेंगे। ॥थ ही ।मय ।मय पर ।पत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे ंबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के ॥थ भी। के ंबंधों में मधुरता रहेगी। ॥थ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी ंबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। ॥थ ही ॥ली एवं ॥लों े भी ंबंधों में मित्रता ।हानुभूति तथा ।हयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे े औपचारिक ंबंध रहेंगे।

इ। प्रकार ।सुराल के लोगों का दृष्टिकोण। के प्रति ।म्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार े प्रसन्न तथा ।न्तुष्ट रहेंगे।